गोविंद मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का स्वरूप

सुधीर सिंह,

शोध छात्र, हंडिया पीं.जी.कॉलेज हंडिया, प्रयागराज

शोध सारांश

गोविंद मिश्र हिंदी के श्रेष्ठतम उन्होंने अब तक उपन्यास के अंतर्गत समाज धर्म को लेकर अनेक प्रकार की जातियों एवं समाज के आपसी मेल मिलाप को दर्शाने का कार्य किया है । गोविंद मिश्र के उपन्यासों में भारतीय समाज में रहने वाले लोगों के तस्वीर को स्पष्ट किया है और उन्होंने रिश्तो की पहचान एवं परंपराओं का निर्वहन मध्यवर्ग की प्रमुखता मानी जाती है देश की आजादी से पूर्व के मध्य वर्ग से लेकर लगातार लेखन का कार्य किया है । गोविंद मिश्र जी का श्रेय उनके खुले पन को जाता है । वह एक खुली भावनाओं के लेखक हैं जो समकालीन कथा साहित्य में उनकी अपनी एक अलग पहचान छोड़ती है उनकी चिंताएं समकालीन समाज से उठकर पृथ्वी पर मनुष्य के रहने के संदर्भ तक की जाती है । जिसका लेखन उन्होंने लाल पीली जमीन , के खुरदरी यथार्थ तुम्हारी रोशनी में की कोमलता और काव्यात्मक धीर समीरे की भारतीय परंपरा की खोज की हुजूरे दरबार और पांच आंगनो वाला घर का इतिहास और अतीत के संदर्भ में आज प्रश्नों की पड़ताल इनके साहित्य को समेटे हुए हैं इनके द्वारा सृजित पात्रों की संख्या हजारों के ऊपर पहुंच गई है इनकी कहानियों में एक तरफ गवाही गांव के लोग दिखाई देते हैं तो एक तरफ भारतीय इतिहास को दिखाया गया है।

प्रस्तावना

"गोविंद मिश्र" जी कथा साहित्य में एक अनमोल हीरा कहे जाते हैं उनका लेखन सर्वोपरि हैं उनकी चिंताएं समकालीन समाज से शुरू होकर पृथ्वी पर मनुष्य के अंतिम समय तक जाती हुई सामाजिक जीवन तक उनकी चिंताएं जाती हैं गोविंद मिश्र जी आधुनिक कथा साहित्य के प्रतिष्ठित महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं उन्होंने अपने उपन्यास में हिंदी साहित्य प्रतिभा, सामर्थ, गहन संवेदना, व्यापक अनुभव तथा सचेतना रचनाशीलता से संपन्न किए तथा उनके उपन्यास विद्या में कथ्य शिल्प के साथ भाषागत स्तर पर नवीनता और मौलिकता के क्षेत्र में उनके प्रयास गंभीर माने जाते हैं गोविंद मिश्र जी उन रचनाकारों में से हैं जिन्होंने अपने साहित्य में भारतीय समाज में परिवार की विविधता के अनेक आयामों को अपने विषय वस्तु के अनुरूप बनाया तथा उनके अधिकांश साहित्य किसी न किसी नए सामाजिक चेतना को लिए हुए हैं तथा उनके द्वारा दिए गए अनेक साक्षात कारों में उनके विभिन्न विचार देखने को मिलते हैं जिससे हमें गोविंद मिश्र जी के सामाजिक चेतना का पता चलताहैं गोविंद मिश्र जी द्वारा लिखित उपन्यास भारतीय विद्या शीर्षक लेख के अंतर्गत हिंदी उपन्यास के विपक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं वह हिंदी उपन्यास के पश्चिम से आई हुई विद्या न मानकर संस्कृत कथा साहित्य से उनका उद्भव मानते हैं उनके अनुसार महाभारत उपन्यास की तरह जीवन के प्रत्येक आयाम को दर्शाता हैं।

गोविंद मिश्र यशस्वी कथाकार है। हिन्दी कहानी में अपनी रचनाशीलता से आपने अत्यंत

महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। जब हिन्दी कहानी भांति–भांति के प्रयोगों से आक्रांत थी तब आपने जमीन से जुड़ी सच्चाइयों को अपनी रचनाओं में केन्द्रीयता दी। मानवीय मनोविज्ञान के अतल मैं उतरकर आपने उन जीवन सत्यों को उद्घाटित किया जिन पर स्थूल यथार्थ औपचारिकता, असमंजस, उपेक्षा आदि की धूल जम गई थी। समय के अनुरूप आपने विकासशील समाज के संघर्ष व स्वप्न को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है।

समय बदला तो समाज का ढांचा बदला. परिवार का स्वरूप बदला परिवार की जरूरतें और आकांक्षाएं बढ़ीं स्त्री शिक्षित होने लगी । शिक्षित हो गई तो नौकरी और कामकाज से जुड़ी, वह आर्थिक रूप से सक्षम हो गई सक्षम हो गई तो उसकी पुरानी स्थिति बदल गई, वह थोड़ा स्वतंत्र हुई इस तरह आप समझ सकते हैं कि सामाजिक संबंधों और संरचनाओं में धीरे–धीरे बदलाव कैसे आते हैं ।

सामाजिक चेतना का अर्थ

सामाजिक – समाजशास्त्र में समाज को सामाजिक संबंधों का जाल कहा जाता हैं ।

समाज का असली अर्थ यह होता है कि – एक साथ मिलकर चलना , जब लोग सामूहिक आदर्श से प्रभावित होकर उस आदर्श की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते हैं । तो वही समाज कहलाता है सामाजिक विकास एक साथ चलते हुए ही संभव है जिसे हम आपसी एकता के द्वारा मजबूत बना सकते हैं ।

सामाजिक चेतना जब एक विशेष आदर से प्रभावित होती है और लोगों में उस आदर्श के कारण एक नवजागरण पैदा होता है तभी सामाजिक जागरूकता संभव है यह बात कई तत्वों पर निर्भर करती है सबसे महत्वपूर्ण तत्व होता है कि एक महान व्यक्तित्व का नेतृत्व मिलना इसके लिए जरूरत है एक महान आदर्शवाद व्यक्तित्व का साथ मिलना । जिसके कारण सुंदर और मजबूत समाज का निर्माण होगा और सामाजिक परिवर्तन हो सकता है ।

चेतना

चेतना शब्द की उत्पत्ति चित्त धातु से हुई है , चित्र का अर्थ होता है मन और ज्ञान तथा बुद्धि जिसके कारण हम सोचते हैं विचार ते हैं और हमारे उस सोच और विचार को ही चेतना का स्वरूप या चेतना कहते हैं ।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चेतना के तीन प्रकार होते हैं चेतना और चेतना , उप चेतना ।

साहित्य की दृष्टि में मानव जीवन एक सचेतन पुराण है जिसमें चेतना जन्मजात पाई जाती है चेतना धर्म से नहीं आती , चेतना जात पात से नहीं आती , चेतना प्रत्येक प्राणी के अंदर जन्मजात रूप में उपस्थित रहती है ।

गोविंद मिश्र द्वारा प्रस्तुत सामाजिक चेतना

संस्कृति किसी समाज तथा राष्ट्र की आत्मा होती है संस्कृति से ही किसी समाज में प्रचलित रीति रिवाज तथा संस्कारों का बोध किया जा सकता है । इन संस्कारों पर ही वहां के सामाजिक जीवन के आदर्श निर्धारित किए जाते हैं । गोविंद मिश्र कथा–साहित्य के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। सन् 1963 से वे लगातार सृजनशील है। आपने समकालीन हिन्दी कथाकारों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी गोविंद मिश्र ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य का बखूबी चित्रण किया है। पारिवारिक जीवन और स्त्री–पुरूष संबंधों का यथार्थए टूटते परिवार और बिखरते मनुष्य मानवीय संबंधों का अवमूल्यनए अंतरंगता की

ललकए मध्यवर्गीय चेतनाए आधुनिक नारीए शहर एवं कस्बे में सांस्कृतिक टकराव टूटन की समस्याएँए छटपटाती नैतिकताए मानवीय गर्माहट की खोजए स्वप्न भंग का यथार्थए शासकीय तंत्र के तिलिस्म का पर्दाफाश इत्यादि विषयों पर आपने खूब लिखा। गोविंद मिश्र यशस्वी कथाकार है। हिन्दी कहानी में अपनी रचनाशीलता से आपने अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। जब हिन्दी कहानी भांति–भांति के प्रयोगों से आक्रांत थी तब आपने जमीन से जुड़ी सच्चाइयों को अपनी रचनाओं में केन्द्रीयता दी। मानवीय मनोविज्ञान के अतल मैं उतरकर आपने उन जीवन सत्यों को उद्घाटित किया जिन पर स्थूल यथार्थ औपचारिकताए असमंजस उपेक्षा आदि की धूल जम गई थी। समय के अनुरूप आपने विकासशील समाज के संघर्ष व स्वप्न को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है।

गोविंद मिश्र द्वारा दिए गए साक्षात्कार को इस शोध पत्रिका में दर्शाया जा रहा हैं । उपन्यास रचना का उद्देश्य जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता हैं लेखक के अपने पात्रों के माध्यम से अपना ही जीवन अनेक विषयों दृ ष्टिकोण को दिखाता हैं और जीवन की विचित्र अवस्था में जाकर जानने की कोशिश भी करता हैं कि व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रिया कैसे चल रही हैं इन पर प्रकाश डालना भी उपन्यास का उद्देश्य है इस विचारधारा को स्पष्ट करने के लिए भी उपन्यासकार लिखते हैं व्यक्ति में चेतना भरना यह भी उपन्यास का दायित्व होता हैं ।

सामाजिक चेतना विकास में गोविंद मिश्र का योगदान

गोविंद मिश्र जी द्वारा रचित उपन्यासों में जीवन के विविध रंग दिखाई देते हैं । उनके उपन्यासों में बच्चों से लेकर बुजुर्ग होने तक की कहानियां ही नहीं अन्य 5 पीढ़ियों तक की कहानियां देखने को मिलते हैं जिसके अंतर्गत उन्होंने दुख दर्द को कैसे इंसान रहता है और सामाजिक परिवेश में होने वाले घृणा आक्रोश , ईष्या , प्रेम , रूढ़िवादी परंपरा इत्यादि रंग देखने को मिलते हैं ।

- गोविंद मिश्र जी द्वारा रचित उनके उपन्यास में उपस्थित सामाजिक चेतना द्वारा समाज के समस्याओं को उजागर करने का योगदान गोविंद मिश्र जी को जाता है । गोविंद मिश्र जी ने अपने प्रथम उपन्यास में संसार के मध्य नौकरशाही जीवन के सभी क्रियाकलापों को दर्शाते हुए आने वाली पीढ़ी को एक सकारात्मक सोच देने का प्रयास किया है ।
- गोविंद मिश्र जी ने अध्ययन के दौरान छात्र एवं छात्राओं के प्रेम प्रसंग को दिखाते हुए जीवन में हो रहे उत्तल पुथल को समझाने का प्रयास किया है । इसी के साथ उन्होंने अपनी रचना द्वारा युवा वर्ग में व्याप्त हिंसा काम क्रोध को भी दर्शा कर आने वाली पीढ़ियों को जागृत करने का प्रयास किया है । गोविंद मिश्र जी ने अपने उपन्यास के द्वारा स्वतंत्रता के 34 साल के पश्चात के समाज को विश्व दृष्टि में परिवर्तन के रूप में दर्शाने का भी प्रयास किया है ।
- गोविंद मिश्र जी ने अपने उपन्यासों के द्वारा भारतीय नारी जो कुंठा ग्रस्त होकर या परंपरा के बीच झूला झूलती हुई दिखाई देती है और जो मुक्ति और बंधन के बीच अपनी पहचान को खोजती रहती है और अपने जीवन में संघर्ष लड़ते हुए अपना जीवन व्यतीत करती है इन आदर्शों को भी दर्शाने का प्रयास गोविंद मिश्र जी ने किया है ।
- गोविंद मिश्र जी ने सांस्कृतिक चेतना के रूप में ब्रज यात्रा की कहानी का विवरण अपने उपन्यास धीर समीरे ने किया है । इसके अंतर्गत उन्होंने जीवन के उन पडाव को दर्शाया है जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन में झलकता है । अथवा उसे सामाजिक परिवेश का एक अंश भी कहा जा सकता है ।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध पत्रिका में शोधार्थी द्वारा किए गए शोध के अनुसार गोविंद मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का स्वरूप को दर्शाने का प्रयास किया गया है । जो कि यह दर्शाता है कि गोविंद मिश्र जी हिंदी साहित्य के श्रेष्ठतम रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने उपन्यासों के माध्यम से समाज के अंदर हो रहे धर्म और जातियों के आपसी मिलाप को राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग दर्शाते हुए उन्होंने घूसखोरी , यौन उत्पीड़न , नारी अस्मिता , एवं विद्यार्थी जीवन को निष्पक्ष रुप से उजागर करते हुए देश–विदेश के विभिन्न स्वरूपों को दर्शा कर समाज में एक अद्भुत चेतना का विकास करने का कार्य किया है जिससे हम आधुनिक युग में आदर्श के नवजागरण को देखते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोविंद मिश्र की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना अलका चटर्जी इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिव्यू एंड रिसर्च इन सोशल साइंस 2018 ।
2. सामाजिक चेतना लाइव हिंदुस्तान टीम 4 फरवरी 2014 ।
3. गोविंद मिश्र के कथा साहित्य में सांस्कृतिक चित्रण डॉक्टर कमलेश इंटरनेशनल जनरल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स 2 अप्रैल 2014 ।
4. गोविंद मिश्र के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय चेतना इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिव्यू एंड रिसर्च इन सोशल साइंस 2018 ।
5. साक्षात्कार : ''मुझ पर सबसे ज्यादा प्रभाव मेरे खुद का है , गोविंद मिश्र सम्पादक, अपनी माटी सोमवार, जुलाई 06, 2020 ।
6. अर्थ ओझल , गोविंद मिश्र भारतीय ज्ञानपीठ ऑनलाइन वेबसाइट पुस्तक के कुछ अंश प्रकाशित वर्ष 1990 ।
7. वह अपना चेहरा , गोविंद मिश्र , अक्षर प्रकाशन , दरियागंज अंसारी रोड , नई दिल्ली , प्र . स . 1971 ।
8. उतरती हुई धूप , गोविन्द मिश्र , राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली , स. 2003।